



ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF RURAL
DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav

G20
भारत 2023 INDIA



नई चेतना - पहल बदलाव की

(जागरूकता - जागृति - कार्य)

लैंगिक हिंसा और भेदभाव के खिलाफ समुदाय के नेतृत्व में
एक राष्ट्रीय अभियान

25 नवंबर 2022-23 दिसंबर 2022

IWWAGE
PERFECTING FOR WHAT WORKS TO ADVANCE WOMEN AND GIRLS IN THE ECONOMY



LEAD
KREA UNIVERSITY
LEVERAGING EVIDENCE FOR
ACCESS AND DEVELOPMENT



ROSHNI
Centre of Women Collectives
Led Social Action



PCI
A Global
Communities
Partner

BILL & MELINDA
GATES foundation

unicef
for every child

नई चेतना - पहल बदलाव की

डी.ए.वाय-एम.आर.एल.एम., ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार
और
आई.डबल्यू.डबल्यू.ए.जी.ई. द्वारा संयुक्त प्रकाशित

यह कॉफी टेबल बुक लैंगिक हिंसा और भेदभाव के खिलाफ समुदाय आधारित राष्ट्रव्यापी अभियान, 'नई चेतना' की शुभारंभ की झलक प्रस्तुत करती है, जिसने जागरूक किया, जनता को संगठित किया और संस्थानों को कार्रवाई करने के लिए तैयार किया। दस्तावेज में कहानियाँ और तस्वीरों को शामिल करने का उद्देश्य पहले वर्ष के विषय 'समानता और लैंगिक हिंसा' के संदेश पर प्रकाश डालना और इसे दर्शकों तक स्पष्ट रूप से पहुंचाना है।



अभियान का लक्ष्य: महिलाओं और लिंग विविध लोगों की एजेंसी और अधिकारों में सुधार करना था ताकि वे अपने लिंग और पारस्परिक पहचान के साथ बिना किसी भेदभाव या हिंसा की आशंका के, एक गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए सभी संरचनात्मक बाधाओं को दूर कर पाएँ।

गिरिराज सिंह
GIRIRAJ SINGH



ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF
RURAL DEVELOPMENT AND PANCHAYATI RAJ
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI



संदेश

एक दशक से अधिक की उल्लेखनीय यात्रा में, दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) ने लगभग 10 करोड़ महिलाओं को 90 लाख स्वयं सहायता समूहों की दुर्जय शक्ति में शामिल किया है। इसने 4.5 लाख ग्राम संगठन बनाए हैं और 30,000 संकुल स्तरीय संगठनों को आगे बढ़ाया है। ये पहल, महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ, लिंग-आधारित अधीनता का सामना करने और उसे खत्म करने की तात्कालिकता को उजागर करती हैं। "नयी चेतना: पहल बदलाव की" अभियान, 25 नवंबर से 23 दिसंबर, 2023 तक एक जोरदार आह्वान, हमारी अटूट प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में खड़ा है। यह कॉफ़ी टेबल बुक अभियान के दृढ़ प्रभाव के इतिहास के रूप में कार्य करती है, जो हमारे समाज के ताने-बाने पर अमिट छाप छोड़ती है।

इस अभियान की सफलता हमारे सामुदायिक कार्यकर्ताओं, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के दृढ़ सदस्यों और हितधारकों के विविध समूह के अथक प्रयासों का प्रमाण है, जो एक ही उद्देश्य के साथ एकजुट हुए - महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थान बनाना और उन्हें हिंसा के खिलाफ उठने के लिए आवश्यक संसाधनों के साथ सुसज्जित करना। इस पुस्तक में प्रलेखित विजय केवल मील के पथर नहीं हैं; वे लचीलेपन, सशक्तिकरण और आशा की भावना का प्रतीक हैं जो इस उल्लेखनीय अभियान को परिभाषित करते हैं।

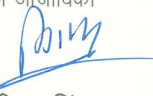
इन पन्नों की हर कहानी बदलाव का आह्वान है, यह याद दिलाती है कि सामूहिक प्रयास उन बेड़ियों को तोड़ सकता है जो हमें सीमित करती हैं। 'नयी चेतना: पहल बदलाव की' सिर्फ एक अभियान नहीं था; यह एक बेहतर कल का वादा था। यह एक ऐसा दृष्टिकोण था जिसने समुदायों के दिलों में जड़ें जमा लीं, बातचीत को प्रोत्साहित किया, कलंक को मिटाया और सहानुभूति को बढ़ावा दिया। यह अभियान एक ऐसी दुनिया की ओर एक कदम था जहां हर महिला बिना किसी डर के, सिर ऊंचा करके और असीमित सपनों के साथ चल सकती है।

इसके बाद के अध्यायों में, हम उन महिलाओं की कहानियों से रूबरू होंगे जिन्होंने अपनी आवाज़ पाई, जो हिंसा की छाया से उभरीं और जो विपरीत परिस्थितियों में मजबूती से खड़ी रहीं। ये कहानियाँ हमारी आशा की सामूहिक कथा हैं, और ये एक ऐसे समाज का मार्ग प्रशस्त करती हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के भीतर की ताकत को स्वीकार करता है। जैसा कि हम इस अभियान की जीत का जश्न मनाते हैं, हमें यह भी पहचानना चाहिए कि यह एक सतत यात्रा है। हमारा संकल्प अटल है - एक ऐसी दुनिया के लिए प्रयास करना जो समानता का जश्न मनाए और हिंसा को उसके सभी रूपों में अस्वीकार कर दे।

आइए हम परिवर्तन के अग्रदूत बने रहें, लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ एकजुट होकर खड़े रहें। आइए हम यह सुनिश्चित करें कि 'नयी चेतना: पहल बदलाव की' की रोशनी लगातार चमकती रहे, एक सुरक्षित, अधिक समावेशी दुनिया का मार्ग रोशन करती रहे।

इस कथा को जीवंत बनाने में सहयोग के लिए दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) और IWWAGE को विशेष धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित,


(गिरिराज सिंह)

साध्वी निरंजन ज्योति
SADHVI NIRANJAN JYOTI



सत्यमेव जयते

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

उपभोक्ता मामले,
खाद्य और सार्वजनिक वितरण एवं
ग्रामीण विकास राज्य मंत्री
भारत सरकार

MINISTER OF STATE FOR
CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION
RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

प्रिय मित्रों,

सामाजिक परिवर्तन के इतिहास में, 'नयी चेतना: पहल बदलाव की' एक महत्वपूर्ण अध्याय है। 25 नवंबर से 23 दिसंबर 2022 तक दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) द्वारा शुरू किया गया यह अभियान, बदलाव के आंदोलन के प्रतीक, एवं लिंग आधारित हिंसा से स्वतंत्र होने के संकल्प की पटकथा लिखने का एक प्रयास था। एक ऐसा भविष्य जहां हर महिला की जीवनयात्रा सुरक्षा, सम्मान और समानता से परिभाषित होगी।

इस कॉफ़ी टेबल बुक में ऐतिहासिक एकाग्र समर्पण और विजय की गहन कथा वर्णित है। इस अभियान की सफलता सामूहिक कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के सदस्यों की अटूट भावना और कई हितधारकों के दृढ़ समर्थन की एक सामूहिक उपलब्धि है जो महिलाओं के लिए सुरक्षित समाज बनाने और उन्हें ज्ञान और संसाधनों के साथ सशक्त करने की उनकी प्रतिबद्धता, आशा और प्रगति की किरण के रूप में खड़ी है।

'नयी चेतना: पहल बदलाव की' हमारे देश का हृदय स्पंदन है। यह सिर्फ एक पहल नहीं थी, यह परिवर्तन का उत्प्रेरक था। इसने समाज को विकास की राह में हर रुकावट के विरुद्ध एकजुट होने, रूढ़िवादिता को चुनौती देने और उन बाधाओं को तोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इस पहल ने बातचीत को बढ़ावा दिया और एक सामूहिक चेतना जगाई जो अब हमें एक ऐसे समाज की ओर प्रेरित करती है जहां हर महिला की आवाज मायने रखती है।

इस पुस्तक की कहानियाँ केवल आख्यान नहीं हैं; वे एकता और दृढ़ संकल्प की शक्ति के प्रमाण हैं। वे उन महिलाओं की यात्राओं को दर्शाती हैं जो विपरीत परिस्थितियों से ऊपर उठ चुकी हैं, जिन्होंने एकता में ताकत पाई है और जिन्होंने बदलाव को प्रेरित किया है। प्रत्येक कहानी एक ऐसी दुनिया की ओर एक कदम है जहां हर महिला निर्भीक है और हर आवाज परिवर्तन का शंखनाद है।

जैसे ही हम खुद को आख्यान में डुबोते हैं, आइए पहचानें कि यह समापन नहीं बल्कि यात्रा की शुरुआत है। एक यात्रा जहां 'नयी चेतना: पहल बदलाव की' एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में जीवित है, जो हमें एक अधिक समावेशी और संवेदनशील समाज की ओर प्रेरित करता है। आइए सुनिश्चित करें कि इस अभियान का नाद महिलाओं को सशक्त बनाने और जीवन में प्रगति के गलियारों में गूंजे।

हम सशक्तिकरण की इस कहानी को प्रस्तुत करने में उनकी अमूल्य साझेदारी के लिए दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन-(DAY-NRLM) और IWWAGE की हार्दिक सराहना करते हैं।

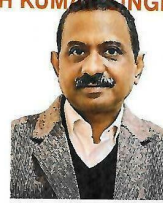
शुभेच्छाएँ,

[साध्वी निरंजन ज्योति]

कार्यालय : 197, ई-विंग, कृषि भवन, डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली - 110001
Office : 197, E Wing, Krishi Bhawan, Dr. R.P. Road, New Delhi - 110001
दूरभाष : 011-23388823, 23388859 • फ़ैक्स : 011-23388827
निवास : बंगला नं. 13, न्यू मोती बाग, नई दिल्ली - 110021
Residence: Bunglow No. 13, New Moti Bagh, New Delhi - 110021
दूरभाष : 011-24105585 • फ़ैक्स : 011-24103228



शैलेश कुमार सिंह आई.ए.एस.
सचिव
SHAILESH KUMAR SINGH IAS
Secretary



75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

भारत सरकार
ग्रामीण विकास मंत्रालय
ग्रामीण विकास विभाग
कृषि भवन, नई दिल्ली-110001
Government of India
Ministry of Rural Development
Department of Rural Development
Krishi Bhawan, New Delhi-110001
Tel. : 91-11-23382230, 23384467
Fax : 011-23382408
E-mail : secyrd@nic.in

नवंबर 23, 2023

प्रस्तावना

सामाजिक विकास की अल्पना में हमेशा इरादे और उद्देश्य से कुछ रंग भरे जाते हैं। 25 नवंबर से 23 दिसंबर 2022 तक दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) द्वारा चलाया गया अभियान 'नई चेतना: पहल बदलाव की' एक ऐसा ही परिवर्तनकारी रंग था। यह लिंग आधारित हिंसा को खत्म करने और परिवर्तन की एक लहर पैदा करने के आह्वान का प्रतीक है जो पूरे देश में गूंजी थी।

जैसे ही हम इस कॉफी टेबल बुक का अनावरण करते हैं, हम एक ऐसी दुनिया में कदम रखते हैं जहाँ कथाएँ शब्दों से ज्यादा जोर से बोलती हैं। इस अभियान की सफलता यहाँ दर्ज की गई कहानियों में गूंजती है - कहानियों का मिश्रण जो अदम्य साहस और मानवीय भावना की विजय को परिभाषित करता है। प्रत्येक कहानी एक आंदोलन की बड़ी कहानी का एक अध्याय है जो सशक्त बनाने, शिक्षित करने और प्रेरित करने का प्रयास करता है।

इन पन्नों में दर्ज की गई विजयगाथा हमारे सामुदायिक कार्यकर्ताओं, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के लचीले सदस्यों और विभिन्न हितधारकों के अथक प्रयासों का परिणाम हैं, जिन्होंने महिलाओं के लिए समर्थन का एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए हाथ मिलाया है। उनके सामूहिक समर्पण ने न केवल अभियान की सफलता सुनिश्चित की बल्कि एक ऐसे समाज के सपने को भी साकार किया जहाँ महिलाएं अब भय और हिंसा की जंजीरों में नहीं जकड़ी हुई हैं।

'नयी चेतना: पहल बदलाव की' एक कैनवास था जहाँ पेंटब्रश का हर स्ट्रोक अनगिनत व्यक्तियों की आशाओं, सपनों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता था। यह महज़ एक अभियान से कहीं अधिक था; यह मानदंडों को चुनौती देने और एक ऐसी जगह बनाने के हमारे दृढ़ संकल्प की अभिव्यक्ति थी जहाँ समानता और सम्मान सर्वोच्च हों। इसने संवाद को प्रोत्साहित किया, चुप्पी को तोड़ा और एक अधिक संवेदनशील दुनिया के लिए मंच तैयार किया।

जैसे-जैसे हम इस पुस्तक में प्रस्तुत आख्यानों का अध्ययन करते हैं, वैसे वैसे हम उन लोगों के कठोर संकल्प से प्रेरित होते हैं जो मजबूती से खड़े रहे। आइए इस अभियान के दौरान बोए गए बीजों का पोषण करते हुए इन्हें परिवर्तन के वृक्ष के रूप में विकसित करें। 'नयी चेतना: पहल बदलाव की' की गूंज न केवल आज बल्कि हर साल लगातार गूंजनी चाहिए, जिससे एक उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित हो सके जहाँ हिंसा की छाया के लिए भी कोई जगह न हो।

इस प्रेरक यात्रा को आगे बढ़ाने में उनके सहयोगात्मक प्रयास के लिए दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) और IWWAGE के प्रति हमारी हार्दिक कृतज्ञता।

शैलेश सिंह

[शैलेश कुमार सिंह]

चरणजीत सिंह
अपर सचिव
CHARANJIT SINGH
Additional Secretary



प्रिय पाठक,

सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में, कुछ प्रयास हमारे सामूहिक आख्यान को फिर से परिभाषित करने की क्षमता रखते हैं। 25 नवंबर से 23 दिसंबर 2022 तक चलने वाला अभियान 'नयी चेतना: पहल बदलाव की', लिंग आधारित हिंसा के विरुद्ध राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की ऐसी ही एक परिवर्तनकारी पहल है।

जैसे ही हम इस कॉफी टेबल बुक के पन्नों को पढ़ते हैं, हम साहस, दृढ़ता और आशा से भरी कहानियों की एक यात्रा करते हैं। इस अभियान की सफलता सिर्फ एक कहानी नहीं है - यह हमारे सामुदायिक संघर्षों के अथक समर्पण, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के सदस्यों की दृढ़ प्रतिबद्धता और उन हितधारकों के अटूट समर्थन एवं सहयोग का एक प्रमाण है। उनके साझा प्रयासों ने हमें महिलाओं के लिए एक अधिक सुरक्षित, न्यायसंगत और सुरक्षित समाज की ओर प्रेरित किया है।

'नयी चेतना: पहल बदलाव की' एक आंदोलन से कहीं अधिक था; यह लैंगिक हिंसा के विरुद्ध विवेकपूर्ण कार्रवाई की पुकार थी। इसने समुदायों के भीतर एक चिंगारी प्रज्वलित की, बातचीत को बढ़ावा दिया, मिथकों को दूर किया और रुढ़ियों को चुनौती दी। इस अभियान ने हमें एक ऐसी दुनिया की कल्पना करने के लिए प्रेरित किया जहां हर महिला हिंसा की छाया से बाहर निकल सके और वादे और अवसर से भरे भविष्य को अपना सके।

इस पुस्तक में समाहित कहानियाँ सशक्तिकरण की भावनाओं और एकता की ताकत को प्रतिबिंबित करती हैं। वे सामूहिक कार्रवाई की क्षमता को रेखांकित करते हुए यह दर्शाते हैं कि जब हम एक साथ खड़े होते हैं, तो हम सबसे गंभीर चुनौतियों का भी सामना कर सकते हैं। प्रत्येक कहानी उन महिलाओं की अदम्य भावना का प्रमाण है, जिन्होंने अपनी आवाज उठाई है और परिवर्तन की किरण बनकर उभरी हैं।

जैसे ही हम पन्ने पलटते हैं, आइए स्वीकार करें कि यह अंत नहीं है बल्कि एक बड़ी यात्रा की प्रस्तावना है। 'नयी चेतना: पहल बदलाव की' एक शाश्वत लौ है जो हमारे पथ को रोशन करती रहेगी, हमें एक ऐसे समाज की ओर ले जाएगी जो समानता, सम्मान और करुणा पर पनपता है। आइए हम यह सुनिश्चित करें कि इस अभियान का सार जीवित रहे, जीवन में बदलाव लाए और एक स्थायी प्रभाव पैदा करें।

आशा की इस कहानी को बुनने में सहयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) और IWWAGE को हार्दिक धन्यवाद।

संभार,

[चरणजीत सिंह]



ग्रामीण विकास मंत्रालय
ग्रामीण विकास विभाग
कक्ष सं. 701, 7वीं मंजिल, एनडीसीसी बिल्डिंग-II
जय सिंह रोड़, जंतर मंतर, नई दिल्ली-110001

MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT
Deptt. of Rural Development
Government of India
Room No. 701, 7th Floor, NDCC Building-II
Jai Singh Road, (Opp. Jantar Mantar)
New Delhi-110001
Tel.: 011-23438012
E-mail: asnrmooffice@gmail.com

स्मृति शरण
संयुक्त सचिव
SMRITI SHARAN
Joint Secretary



ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
कक्ष सं. 704, 7वीं मंजिल, एनडीसीसी बिल्डिंग-II
जय सिंह रोड, जंतर मंतर, नई दिल्ली-110001
MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT
Government of India
Room No. 704, 7th Floor, NDCC Building-II
Jai Singh Road, (Opp. Jantar Mantar)
New Delhi-110001
Tel.: 011-23438003
E-mail: smriti.sharan69@gov.in

आदरणीय पाठको,

'नयी चेतना: पहल बदलाव की' अभियान ने हमारे समाज की सामूहिक चेतना में एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया। यह 25 नवंबर से 23 दिसंबर 2022 तक दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) द्वारा शुरू की गई लिंग आधारित हिंसा के खिलाफ एक प्रेरक पहल थी। यह अभियान सिर्फ एक यात्रा नहीं थी; यह परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक था, एक प्रकाशस्तंभ जिसने एक ऐसे भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया जहां महिलाएं हिंसा की छाया से मुक्त होकर रह सकें।

यह कॉफी टेबल बुक इस आंदोलन की विजय के प्रमाण के रूप में खड़ी है। इसमें अटूट एकता की भावना और अभियान की शानदार सफलता की कहानियाँ शामिल हैं। यह हमारे सामुदायिक कार्यकर्ताओं के एकाग्र समर्पण, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के सदस्यों के अथक प्रयास और उन हितधारकों के हार्दिक समर्थन का प्रमाण है जो एक ऐसे समाज की स्थापना के समर्थन में शक्ति के स्तंभ के रूप में खड़े थे जहां महिलाएं सुरक्षित और सशक्त महसूस करें।

'नयी चेतना: पहल बदलाव की' सिर्फ एक पहल से कहीं अधिक था - यह एक उज्ज्वल भविष्य का वादा था। यह मानदंडों को चुनौती देने, बाधाओं को लांघने और लिंग आधारित हिंसा पर चुप्पी को तोड़ने का निमंत्रण था। इसने लोगों के दिलों में एक लौ जला दी, जिससे हिंसा के प्रति लंबे समय खामोशी साधे लबों को जुबान मिल गयी।

इस पुस्तक की कहानियाँ सशक्तिकरण और साहस की कहानियाँ हैं। वे उन महिलाओं के जीवन की एक झलक हैं जो मजबूत होकर उभरी हैं, जो प्रतिकूल परिस्थितियों के खिलाफ खड़ी रहीं और जिन्होंने बदलाव को प्रेरित किया है। प्रत्येक कहानी एक ऐसे समाज की उभरती कहानी का एक अध्याय है जो लैंगिक हिंसा की जंजीरों से स्वतंत्र है।

जैसे-जैसे हम खुद को आख्यान में डुबोते हैं, आइए पहचानें कि यह एक यात्रा है जिसे निरंतर जारी रहना चाहिए। 'नयी चेतना: पहल बदलाव की' की गूँज हमारे कार्यों में गूँजनी चाहिए, जो हमें बदलाव की वकालत करने, यथास्थिति को चुनौती देने और एक ऐसी दुनिया का निर्माण करने का आग्रह करती है जहाँ हर महिला बिना किसी डर के रह सके।

इस सशक्त कथा की संयुक्त रूप से कल्पना और रचना करने के लिए दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) और IWwAGE को विशेष धन्यवाद।

नमस्कार
स्मृति शरण
[स्मृति शरण]

आभार

दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) और आइवेज-लीड ने इस कॉफी टेबल बुक को तैयार करने के लिए साझेदारी की है ताकि पूरे माह चलने वाले - नई चेतना - पहल बदलाव की नामक अभियान के माध्यम से इस सफर का उत्सव मनाया जा सके। इस अभियान की परिकल्पना लैंगिक हिंसा के बारे में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से की गई है। यह अभियान केवल डीएवाई-एनआरएलएम संस्थानों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अन्य संबंधित विभागों के साथ भी जुड़ा हुआ है। डीएवाई-एनआरएलएम सभी राज्य आधारित ग्रामीण आजीविका मिशनों (एसआरएलएम) को गतिविधियां चलाने, जागरूकता बढ़ाने और अभियान के सफल कार्यान्वयन में उनके सहयोग के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता है। डीएवाई-एनआरएलएम तमिलनाडु, पुडुचेरी, ओडिशा, मेघालय और मध्य प्रदेश के एसआरएलएम का विशेष आभार व्यक्त करना चाहता है, जिन्होंने इन गतिविधियों को सुनिश्चित करने के लिए साक्षात्कार और आवश्यक व्यवस्थाओं में सहयोग दिया। नई चेतना वास्तव में एक समुदाय-आधारित अभियान था और कार्यक्रम टीम उन सभी को धन्यवाद देना चाहेगी जो सभी स्तरों अर्थात् जिला, ब्लॉक, राज्यों, ग्राम संगठन (वीओ), समूह स्तरीय संघ (सीएलएफ) और स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) पर अभियान का हिस्सा थे। पूरे अभियान के दौरान हमें पीसीआई इंडिया, रोशनी और यूनिसेफ जैसे सहयोगियों से भी लगातार समर्थन मिला।

इस अभियान अवधि के दौरान महिलाओं के अनुभव और एसआरएलएम की मान्यताओं को इस कॉफी टेबल बुक में संजोने के लिए आइवेज के प्रयास की सराहना की जाती है। आइवेज लीड की एक पहल है, जो आइएफएमआर सोसाइटी (सोसायटी अधिनियम के तहत पंजीकृत एक गैर-लाभकारी संस्था) का एक प्रतिबद्ध अनुसंधान केंद्र है। शिक्षाविदों और अनुसंधान केंद्र के बीच तालमेल पैदा करने के लिए लीड को केआरईए यूनिवर्सिटी (अईएफएमआर सोसायटी द्वारा प्रायोजित) से कार्यनीतिक निगरानी और ब्रांड समर्थन प्राप्त है। आइवेज को बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन का भी सहयोग प्राप्त है। इस रिपोर्ट के निष्कर्ष और परिणाम लेखकों के हैं और जरूरी नहीं कि वे बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के विचारों से मेल खाते हों।

डिजाइन और प्रलेखन: सिमरन अरोड़ा, अर्पि नारंग, अक्षरा बाला
संपादकीय सहयोग: मौमिता सरकार, पल्लवी दुग्गल, प्रीति राव

संकेताक्षर की सूची

बीएमएमयू	ब्लॉक मिशन प्रबंधन यूनिट
सीएलएफ	समूह स्तरीय संघ
सीएसओ	नागरिक समाज संगठन
डीएवाई- एनआरएलएम	दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
डीएमएमयू	जिला मिशन प्रबंधन इकाई
डीएलएसए	जिला विधिक सेवा प्राधिकरण
जीबीवी	लैंगिक हिंसा
एमओआरडी	ग्रामीण विकास मंत्रालय
एनएमएमयू	राष्ट्रीय मिशन प्रबंधन इकाई
एसएमएमयू	राज्य मिशन प्रबंधन इकाई
पीआरआई	पंचायती राज संस्था
सैक	राज्य कार्य समिति
एसएचजी	स्वयं सहायता समूह
वीओ	ग्राम संगठन

विषय-सूची

प्रस्तावना	4
01 संदर्भ	5
02 अभियान	8
03 अभियान के अंतर्गत कार्रवाई	12
योजना	13
तैयारी	14
प्रारंभ	15
□ फिल्म का प्रदर्शन	
□ रंगोली	
□ कैंडल मार्च	
□ रैलियां	
□ पोस्टर और बैनर	
□ मीडिया की भूमिका	
04 अभियान की सफलता ने अगले वर्ष की रूपरेखा निर्धारित की	32
समापन टिप्पणी	40

पृष्ठभूमि

दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है जिसे ग्रामीण विकास विभाग द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। डीएवाई एनआरएलएम सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के सिद्धांतों पर आधारित है। कार्यक्रम गरीबी को कम करने के लिए एक बहु-आयामी रणनीति अपनाता है। इन रणनीतियों में महिलाओं के संस्थानों का निर्माण, उनकी क्षमता बढ़ाना तथा कृषि और गैर-कृषि दोनों क्षेत्रों में आर्थिक अवसरों के लिए महिलाओं द्वारा उत्पादक संसाधनों तक पहुंच को सक्षम बनाना शामिल है।

यह सुनिश्चित करने के लिए लक्षित कार्यक्रमलाप किए गए हैं कि गरीब महिलाओं की ये संस्थाएं अधिकारों और हकदारियों से लेकर लैंगिक हिंसा (जीबीवी) तक कई मुद्दों का समाधान करने में सक्षम हैं। ये संस्थाएं महिलाओं को एकजुट करने और समुदाय में महिलाओं और लड़कियों के जीवन को प्रभावित करने वाले वाली अनेक समस्याओं के समाधान खोजने के लिए विभिन्न संबंधित विभागों के साथ संपर्क बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालाँकि, लैंगिक हिंसा का समाधान करने के लिए जागरूकता पैदा करने, चेतना जगाने और कार्यों को अंजाम देने के लिए ठोस दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

चूँकि लैंगिक हिंसा व्यापक रूप से फैली हुई है, इसके प्रतिकूल परिणाम पड़ते हैं जो निजी और सार्वजनिक स्थानों में महिलाओं की अभिव्यक्ति और भागीदारी को सीमित कर देते हैं। इस प्रकार, डीएवाई एनआरएलएम ने विभिन्न सहयोगियों के साथ जुड़ने का एक अनूठा तरीका अपनाया, जिसमें ग्राम से लेकर ब्लॉक स्तर तक महिलाओं के विभिन्न संस्थान जैसे एसएचजी, जेंडर प्वाइंट पर्सन, जेंडर फोरम, समूह स्तरीय संघ में सामाजिक कार्य समिति, ग्राम स्तर के संगठन में सामाजिक कार्य समिति, लैंगिक संसाधन केंद्र, परिवार के पुरुष सदस्य, किशोर एवं किशोरियां तथा संबंधित विभाग शामिल हैं ताकि रोकथाम के बारे में जागरूकता पैदा की जा सके और लैंगिक हिंसा का समाधान खोजा जा सके।

उपर्युक्त संदर्भ में, 25 नवंबर, 2022, अंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस के अवसर पर लैंगिक भेदभाव के खिलाफ समुदाय आधारित राष्ट्रव्यापी वार्षिक अभियान "नई चेतना - पहल बदलाव की" का शुभारम्भ किया गया जो 23 दिसंबर, 2022 तक चला। इस अभियान का लक्ष्य महिलाओं और लिंग विविध लोगों की एजेंसी और अधिकारों में सुधार करना था ताकि वे अपने लिंग और पारस्परिक पहचान के साथ बिना किसी भेदभाव या हिंसा की आशंका के एक गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए सभी संरचनात्मक बाधाओं को दूर कर पाएँ।

संयुक्त सचिव

ग्रामीण विकास मंत्रालय



01

संदर्भ

किसी राष्ट्र का विकास प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपनी पूरी क्षमता और आत्मसम्मान के साथ देश की अर्थव्यवस्था में दिए गए योगदान पर निर्भर करता है। परंतु, अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका को स्वीकार करने में लैंगिक असमानता तथा महिलाओं, लड़कियों और विविध जेंडर वाले व्यक्तियों के खिलाफ लैंगिक भेदभाव, लिंग आधारित हिंसा आदि सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। यह ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में अधिक गहराई से महसूस किया जाता है। लैंगिक भेदभाव और हिंसा व्यक्तियों पर शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालती हैं जिससे आत्म-विकास और राष्ट्र निर्माण में व्यक्तियों की क्षमता प्रभावित होती है और राष्ट्र का विकास बाधित होता है।

उपर्युक्त को देखते हुए, ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) के तहत दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) का मानना है कि संस्थानों को सक्षम बनाने के लिए लैंगिक संवेदनशीलता और सामाजिक कार्यवाई को इसके ढांचे और प्रणालियों की मुख्यधारा में शामिल किया जाना चाहिए ताकि प्रक्रियाएं, सतत सामाजिक और आर्थिक विकास प्राप्त करें। इसके लिए डीएवाई एनआरएलएम आम तौर पर गरीब महिलाओं को संगठित करता है लेकिन हिंसा से पीड़ित, मानव तस्करी, देह व्यापार, देवदासी प्रथा आदि की शिकार महिलाएं, एकल महिलाएं, परित्यक्त महिला, तलाकशुदा, एचआईवी पॉजिटिव महिलाएं आदि तक पहुंचने के लिए विशेष प्रयास भी करता है। डीएवाई एनआरएलएम लैंगिक मुख्यधारा के अपने लक्ष्य के अनुरूप ऐसे संस्थानों का निर्माण करना चाहता है जो महिलाओं को इन उद्देश्यों को हासिल करने में सहायता करते हैं: क) पहचान: खुद की सकारात्मक छवि और गरिमा, ख) एकजुटता: आवाज उठाना, निर्णय लेना और अकेला महसूस न करना, ग) क्षमता: ज्ञान, कौशल, संसाधन और मालिकाना अधिकार, घ) पहुंच: अधिकार, हक और सेवाएं, ड) कल्याण: आजीविका और जीवन; और, च) व्यापक स्वतंत्रता और पसंदीदा पोर्टफोलियो।

इस मुद्दे में तेजी लाने और लैंगिक हिंसा (जीबीवी) को दूर करने के लिए व्यवस्था में प्रभावी ढंग से हस्तक्षेप करने के लिए डीएवाई-एनआरएलएम ने एनएमएमयू, एसएमएमयू, डीएमएमयू, बीएमएमयू, समुदाय आधारित संगठनों, समुदायों और नागरिक समाज की भागीदारी को ध्यान में रखकर अभियान तैयार किया है। इसलिए, पांच साल लंबे राष्ट्रीय अभियान 'नई चेतना' को समानता, अधिकार और सशक्तिकरण के अग्रदूत के रूप में शुरू किया गया है, जिसमें प्रत्येक वर्ष लैंगिक समानता के मुद्दों से सम्बंधित विशिष्ट विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

- रंगोली बनाने के बाद एक साथ खड़ी मध्य प्रदेश की महिलाएं। "जब हम अपने मन की बात कहने के लिए एक साथ खड़े होते हैं तो हमारे चेहरों पर मधुर मुस्कान और चमक बरकरार रहती है।"





- एसएचजी सदस्यों द्वारा महिलाओं के अधिकारों और समानता पर बनाई गई रंगीन रंगोली का चित्र। "दिलों में खुशी और होठों पर मुस्कान के साथ, रंगोली टपिस के साथ बोलते हमारे अधिकार। दिलों में खुशी और होठों पर मुस्कान के साथ हमारे भवष्य को बयां करती रंग-बरिगी पट्टियां।"



- रंगोली कार्यक्रम के तहत हाथ में नारे लिए रैली कार्यक्रम के लिए तैयार होतीं तिरुवल्लूर, तमिलनाडु जिले की महिलाएं। "यहां हम एक साथ बदलाव लाने के लिए एकत्र हुए हैं।"



02

અભિયાન

नई चेतना - पहल बदलाव की एक सामुदायिक आधारित जन प्रेरक अभियान है, जो ग्रामीण विकास मंत्रालय (एमओआरडी) के प्रमुख कार्यक्रम डीएवाई-एनआरएलएम द्वारा शुरू की गई एक अखिल भारतीय पहल है। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि लैंगिक हिंसा और भेदभाव व्यक्तिगत और सामाजिक विकास प्राप्त करने में बाधा है, अभियान का उद्देश्य हिंसा के विभिन्न रूपों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करना और यह देखना है कि इन मुद्दों का समाधान करने में संस्थान संबंधित विभागों के साथ मिलकर रेफरल सेवाएं प्राप्त करने में किस तरह से प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। इस प्रकार, देश में महिलाओं और लड़कियों की क्षमता को बढ़ाना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।

अपने पहले ही वर्ष अर्थात् 2022 के दौरान, राष्ट्रव्यापी अभियान 'समानता और लैंगिक हिंसा' जैसे व्यापक और प्रेरणादायी विषय के साथ शुरू हुआ है। इस विषय का चयन करने का उद्देश्य यह है कि भेदभाव के मूल कारण अर्थात् 'हिंसा' की उसके विभिन्न रूपों में - चाहे प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष, की पहचान की जाए, उसे मान्यता और स्वीकृति दी जाए। यह मासिक अभियान 25 नवंबर, 2022 को महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ हिंसा उन्मूलन के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर देश के कोने-कोने में शुरू किया गया था जो आगामी वर्ष के लिए एक प्रेरक एजेंडा बनाने के साथ 23 दिसंबर 2022 को संपन्न हुआ।

यह अभियान चार मजबूत स्तंभों या घटकों पर टिका हुआ है अर्थात् पहले वर्ष का विषय था 'समानता और लैंगिक हिंसा' को पहचानना, आवाज उठाना, समर्थन मांगना और एकजुटता दिखाना। इसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से यह संदेश देना था कि हिंसा, विशेष रूप से महिलाओं, लड़कियों और विविध जेंडर वाले व्यक्तियों के खिलाफ होने वाली हिंसा चाहे किसी भी रूप में हो, एक सामाजिक

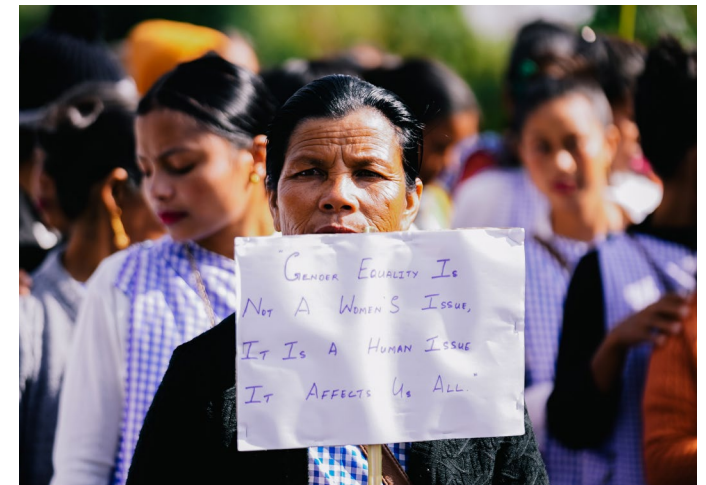
बुराई है। हिंसा के शिकार लोगों को उन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों का पता लगाना चाहिए जो हिंसा का कारण बनते हैं, उनमें आवाज उठाने और सहायता या मदद मांगने की हिम्मत होनी चाहिए; तथा महिलाओं की क्षमता बढ़ाने और अधिकार प्रदान करने में मदद के लिए सभी हितधारकों के सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है।

जन जागरूकता अभियान ने अपने पहले चरण में महिलाओं, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं को लैंगिक हिंसा के बारे में जानकारी देने, हिंसा को पहचानने में सहायता करने, उन्हें स्थानीय स्तर पर आवाज उठाने और विभिन्न संस्थानों के माध्यम से इनका समाधान करने का प्रयास किया। इसने जमीनी स्तर पर व्यक्तियों, पीड़ितों, हिंसा से प्रभावित लोगों तथा जिलों, राज्यों और सरकारी स्तर पर कार्य करने वाले समूहों और बहु-हितधारकों को जागरूक करके अपनी छाप छोड़ी, जिन्होंने अभियान के लक्ष्य के प्रति एकजुटता और प्रतिबद्धता दिखाई।

लैंगिक समानता अभियान, नई चेतना, अगले पांच वर्षों तक प्रतिवर्ष मनाया जाएगा, जिसमें प्रत्येक वर्ष लैंगिक समानता पर आधारित विशिष्ट विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस अभियान को एक 'जन आंदोलन' बनाने की परिकल्पना की गई है, जिसमें महीने भर चलने वाले अभियान के बाद शेष वर्ष के लिए बाद में की जाने वाली कार्रवाई की योजना बनाई गई है। इस तरह यह धीरे-धीरे आने वाले समय में बहु-आयामी कार्रवाई करके कई कमियां दूर करेगा तथा अन्य विभागों के सहयोग और सहायता को भी हासिल कर अंतर-विषयक दृष्टिकोण को व्यापक बनाने की दिशा में काम करेगा।



- मेघालय के काशी जिले में रैली के दौरान एक महिला। "लैंगिक भेदभाव मानवता के खिलाफ अपराध है, यह अज्ञानता का बहाना नहीं है। मानवता के खिलाफ अपराध का कोई जेंडर नहीं होता, इसे तुरंत रोकें"



- रैली के दौरान तख्ती पकड़े एक महिला जिस पर यह नारा लिखा था: "सम्मान, आदर और प्यार वह नींव है जिस पर मेरी पहचान कायम है। जागृति बढ़ रही है... आवाजें ऊंची उठ रही हैं। "जागृति आ रही है, आवाजें उठ रही हैं, और इनके बीच रैली आगे बढ़ती है"।



- मेघालय के काशी गांव में हंसी-मजाक के साथ एक प्रहसन होता है। "शो आगे बढ़ता है...उम्मीदों को जिंदा रखते हुए नुक्कड़-नाटकों में शामिल जागृत समुदाय और व्यवस्था में शामिल लोग"।



- धर्मपुरी जिले में एसएचजी समुदाय के स्वयंसेवकों में से एक ने अभियान गतिविधि के दौरान खुद को कपड़े की पट्टियों से बांध लिया, ताकि प्रतीकात्मक रूप से यह दर्शाया जा सके कि कैसे महिलाएं वास्तव में आजादी और अपना हक प्राप्त करने के लिए बंधी हुई हैं। "आप संवेदनाओं को चुप करा सकते हैं लेकिन आवाज़ को नहीं... एसएचजी न्याय और अधिकार सुरक्षित करने के लिए झकझोरती हैं"



- मध्य प्रदेश की एसएचजी महिला ढिंडोरी जिले में दीवारों पर महिला सशक्तिकरण के बारे में लिखती हुई। "जब दिमाग बोलता है और हाथ लिखते हैं... तो समुदाय अपने अधिकार प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होता है"।



03

अभियान के तहत
कार्रवाई

यह एक राष्ट्रव्यापी जागरूकता अभियान है, जो सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैला है और अपनी तरह का अनूठा अभियान रहा है। सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा लगभग एक ही समय में समन्वय के साथ और एकजुट होकर काम करना एक उल्लेखनीय प्रयास था। अभियान को सभी राज्यों द्वारा सामुदायिक संस्थानों और सहयोगियों के सामूहिक प्रयास से लागू किया गया था, और सभी स्तरों यानी ग्रामों, ब्लॉकों और जिलों में सक्रिय रूप से क्रियान्वित किया गया था। यह हिंसा के मुद्दों को स्वीकार करने, पहचानने और उन पर चर्चा के लिए संगठित प्रयास करने के लिए सभी संबंधित विभागों और सहयोगियों को एक मंच पर लाया। इसका असर काफी दूर तक महसूस किया गया, जिसमें सभी प्रमुख कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया गया तथा ढांचों और संस्थानों को शामिल किया गया, जो इस बदलाव के मुख्य कारक हैं।

योजना

कोई सफल अभियान अपनी उत्कृष्ट रणनीति, सोच-समझकर बनाई गई योजना, जमीनी स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक मौजूदा शक्तियों का लाभ उठाने; उत्साही व्यक्तियों, सामुदायिक संगठनों, संस्थानों और सरकार को शामिल करने पर निर्भर करता है। उल्लेखनीय है कि इस अभियान में हिंसा के खिलाफ आवाज उठाने के लिए महिलाओं, लड़कियों और विभिन्न जेंडर वाले लोगों की सक्रिय भागीदारी को अभिन्न अंग के रूप में लिया गया।

अभियान को शुरू करने के लिए योजना बनाने का कार्य अक्टूबर

2022 में शुरू हो गया था, जब ग्रामीण विकास मंत्रालय के सचिव ने एक अधिसूचना जारी की, जिसमें इस अभियान को बड़े पैमाने पर शुरू करने के लिए ठोस कार्रवाई का आह्वान किया गया था। अभियान की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए, सचिव द्वारा योजना की कुछ प्रक्रियाओं को प्रारंभिक चरण में ही साझा किया गया था। इनमें ये शामिल हैं: हर राज्य में एक नोडल व्यक्ति द्वारा गतिविधियों का समन्वय, 25 नवंबर, 2022 को राष्ट्रीय स्तर पर अभियान शुरू करने के दौरान सभी की भागीदारी, राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर परामर्शी कार्यशालाएं, भागीदारी के लिए सभी राज्य समकक्षों को निर्देश, (ड.) सोशल मीडिया संदेश के माध्यम से जागरूकता बढ़ाना और च) हर राज्य में, हर स्तर पर प्रमुख गतिविधियों पर एक कार्य-योजना तैयार करना।

प्रमुख कार्यकर्ता, संरचनाएं और संस्थाएं - अभियान में कार्याकल्प के प्रणेता:

- महिलाओं के नेतृत्व वाली संस्थाएं (एसएचजी/ वीओ/ सीएलएफ/ ग्राम संगठन सामाजिक कार्य समिति/ सीएलएफ-एसएसी)
- पंचायती राज संस्थान (पीआरआई)
- समुदाय के सदस्य (पुरुष, महिला, किशोर और किशोरियां, बुजुर्ग, डीएवाई-एनआरएलएम कार्यक्षेत्र)
- सीएसओ (नागरिक सामाजिक संगठन),
- सेवा प्रदाता (पुलिस, अस्पताल, संपूर्ण संकट निवारण केंद्र, डीएलएसए, स्वास्थ्य और डब्ल्यूसीडी आदि)।

तैयारी

लैंगिक अभियान की शुरुआती योजना में चार सप्ताह की अवधि के भीतर कई स्तरों पर की जाने वाली विविध गतिविधियों को शामिल किया गया था। सभी राज्यों को उनकी प्राथमिकताओं, सुविधाओं और जमीनी हकीकत के अनुसार गतिविधियों की सूची में से गतिविधियां चुनने का अवसर दिया गया था।

नवंबर के पहले सप्ताह से ही अभियान को बड़े पैमाने पर शुरू करने के लिए जोर-शोर से तैयारी शुरू हो गई थी और यह 20 नवंबर 2022 तक जारी रही। कार्य को राज्य (एसआईएमएमयू), जिला (डीआईएमएमयू), ब्लॉक (बीआईएमएमयू), ग्राम (वीओ, सीएलएफ, एसएचजी) स्तरों पर व्यवस्थित ढंग से बांटने से कार्यकर्ताओं को कार्रवाई के लिए खुद को तैयार करने में मदद मिली।

कुछ प्रमुख तैयारियों में ये शामिल थे - अभियान को तेज करने के लिए एक प्रमुख टीम का गठन, अभियान को शुरू करने और निगरानी के लिए सप्ताह-वार योजना बनाना, विषय पर एक राष्ट्रीय परामर्श आयोजित करना और सभी भागीदारों के साथ उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर बैठकें करना, एक नियंत्रण केंद्र का गठन करना, उचित समन्वय के लिए संबंधित विभागों, जिला, ब्लॉक और ग्राम अधिकारियों के साथ बैठक करना। यह राज्य प्रबंधन यूनिटों द्वारा किया गया था। जिलों में तैयारियों में आईईसी सामग्री का प्रसार, स्थानीय मीडिया को ऑनबोर्ड करना, समुदाय में संसाधन सामग्री का प्रसार करना और प्रक्रिया शुरू करने पर सामुदायिक संस्थानों को जानकारी देना शामिल हैं। ब्लॉक स्तर पर, वीओ, सीएलएफ, एसएचजी, पीआरआई - सभी को जानकारी दी गई, लैंगिक हिंसा और महिलाओं की समानता के बारे में सूचित करने के लिए अभियान संसाधन वितरित किए गए।

- मध्य प्रदेश में नई चेतना का बैनर लेकर रैली की अगुआई करती महिलाएं और बच्चे. "आज अपना कल बनाने का दनि है"





शुरुआत

देश के 34 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के ग्राम, ब्लॉक और जिले अभियान की गतिविधियों को जोर-शोर से आगे बढ़ाने के लिए तैयार थे। 'समानता और लैंगिक हिंसा' विषय के अनुसार और इसके ढांचे के अनुरूप (स्वीकारना, आवाज उठाना, समर्थन मांगना और एकजुटता दिखाना), 'नई चेतना' की भावना स्पष्ट और सरल थी। सभी के द्वारा अभियान का लक्ष्य हासिल करने के प्रति समर्पण की भावना कम नहीं थी, जैसे "एजेंसी और महिलाओं एवं विविध लैंगिक व्यक्तियों के अधिकारों को आगे बढ़ाना, उनकी लैंगिकता और परस्पर पहचान के आधार पर भेदभाव और हिंसा के डर के बिना गरिमापूर्ण जीवन के लिए ढांचागत बाधाओं को दूर करना।"

25 नवंबर, 2022 एक बड़ा दिन था जब अभियान को राष्ट्रीय स्तर पर और एक साथ सभी राज्यों में लागू किया गया। अभियान का सुचारू और व्यवस्थित रूप से संचालन

हुआ, क्योंकि प्रत्येक सप्ताह की गतिविधियों की मुख्य विशेषताएं अभियान के प्रमुख घटकों के अनुरूप थीं। पहला सप्ताह समुदाय को लैंगिक हिंसा के कारणों की पहचान करने और समुदाय को उन्हें स्वीकार करने में मदद करने के लिए समर्पित था, दूसरे सप्ताह ने 'आवाज उठाने और सहायता मांगने' के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा की। तीसरे और अंतिम सप्ताह की गतिविधियाँ पूरी तरह से एकजुटता की अभिव्यक्ति तथा समन्वय और भावी कार्यवाई के लिए सभी सहयोगियों के एक मंच पर आने पर केंद्रित थीं।

इसके अलावा, लैंगिक समानता और अधिकारिता की मांग के लिए सभी आयु वर्ग के महिला-पुरुषों, सामुदायिक समूह, ग्राम संगठनों, स्वयं सहायता समूहों, सीएलएफ, सरकार, पुलिस, पीआरआई और मीडिया सभी के एकजुट होने से उम्मीद और उत्साह काफी बढ़ गया।



सभी स्तर पर व्यापक कार्यवाई किसी भी बदलाव की परिकल्पना करने के लिए सभी सहयोगियों की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है। नई चेतना के पहले वर्ष ने प्रत्येक हितधारक की ताकत से और उन्हें उपयुक्त साधन उपलब्ध कराने से अभियान में तेजी आई, जिनका पूरी क्षमता से उपयोग किया गया था --

- धर्मपुरी जिले में कलेक्टर कार्यालय के सामने आयोजित रंगोली कार्यक्रम में भाग लेती महिलाएं। "हमारी रंगोली महज एक कला नहीं है... यह अधिकारों के लिए हमारी पुकार है जिसे हमने अपने दिलों से रंगा है"

फ़िल्म का प्रदर्शन

ऑडियो विजुअल प्रस्तुति लिखित या बोले गए शब्दों की तुलना में मन और भावनाओं को अधिक शक्तिशाली ढंग से प्रभावित करती है। इसलिए फिल्म प्रदर्शन दर्शकों से एक सशक्त संचार माध्यम रहा है। बड़ी संख्या में दर्शकों तक पहुँचने और उन्हें लैंगिक हिंसा के बारे में जागरूक करने तथा मानसिकता में बदलाव लाने के लिए जिला कार्यालयों द्वारा चुनिंदा स्थानों पर फिल्में (या सामुदायिक सिनेमा) दिखाई गईं।

इसके लिए ऐसी फिल्मों को चुना गया जो महिलाओं के जीवन में समानता के अधिकार और भविष्य में समान अवसर दिलाने की हिमायत में मदद कर सकती हों। फिल्म प्रदर्शित करने का उद्देश्य लैंगिक मुद्दों के बारे में वास्तविकता से रूबरू कराना था। दर्शक फिल्म के पात्रों के साथ आसानी से जुड़ सकते हैं, चीजों को उनके वास्तविक रूप में बेहतर ढंग से समझ सकते हैं, लैंगिक हिंसा के विभिन्न रूपों को वर्गीकृत कर सकते हैं और अन्य वास्तविकताओं को भी जान सकते हैं, जिन्हें पहले अनदेखा कर दिया गया था।

- धरमपुरी जिले में एक भाषण के दौरान महिलाएं और स्कूली बच्चे, जो अभियान के अनगिनत नारों और पोस्टरों से भरा था। "हाथों में पोस्टर लेकर हम बदलाव लाने के लिए एकजुट हैं।"





- ओडिशा में फिल्म देखने के लिए पैदल चलकर जाते समुदाय की महिलाएं और बच्चे। "बेहतर कल के लिए धीरे-धीरे बढ़ते कदम"

- एक किशोरी को रंगोली बनाना सिखाती बुजुर्ग महिला। "सीखकर कल नेता बनें...आज अपने रास्तों को रंगें"



- तिरुवल्लूर जिले की महिलाएं कलेक्टर कार्यालय में एक-दूसरे के रंगोली चित्रों को सराहती हुई। "रंग जो खुशी के पलों को अपने तरीके से अभिव्यक्त करते हैं"





रंगोली

जब जीवन और समाज की जीवंतता और आत्म-अभिव्यक्ति को दर्शाने वाले रंग किसी अभियान का हिस्सा बनते हैं, तो वे अभियान चलाने वालों की चेतना को दर्शाते हैं। "नई चेतना" को रंगोली कार्यक्रम के आयोजन से उत्साह मिला।

पुरुषों को प्राथमिकता देने और भेदभाव का सामना करने वाली महिलाओं और लड़कियों ने रंगोली के माध्यम से समुदाय को हिंसा के बारे में अपनी जागरूकता बताई, जो आत्म-विकास, कल्याण और गरिमापूर्ण जीवन में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए रंगोली आयोजन का विषय लैंगिक हिंसा रखा गया था जिसके माध्यम से उन्होंने लैंगिक समानता वाले समाज के लिए अपनी आवाज उठाई, जहां महिलाएं और लड़कियां हिंसा, यौन शोषण, बाल-विवाह और ऐसी अन्य अन्यायपूर्ण प्रथाओं से मुक्त हों।

एसएचजी की अगुआई में सभी महिलाओं ने रंगोली कार्यक्रम को अपने विचारों व्यक्त करने, अपने दर्द को बयां करने, अपने अधिकारों और प्राथमिकताओं को दर्शाने का एक माध्यम बनाया तथा राष्ट्रीय अभियान के लिए सामूहिक रूप से अपना समर्थन प्रदर्शित किया। जिला कलक्टर ने कार्यक्रम में शिरकत की, उनके कार्य को सराहा और विजेताओं की घोषणा की।

- तिरुवल्लुर जिले में महिलाओं द्वारा बनाई गई रंगोली। चित्र में एक महिला को उसकी राय की अभिव्यक्ति और आजादी पर रोक लगाना दर्शाया गया है। "हम समान रूप से पैदा हुए हैं इसलिए आजादी हमारा अधिकार है।"

कैंडल मार्च

मोमबत्ती जीवन के अंधेरे में प्रकाश का प्रतीक है, और यही कैंडल मार्च का उद्देश्य भी है। जेंडर के बारे में लोगों में व्याप्त धारणाओं और पूर्वाग्रहों को दूर करके सकारात्मकता और आशा पैदा करने के लिए विभिन्न जिलों में कैंडल मार्च के माध्यम से जेंडर भेदभाव, असमानता और हिंसा को समाप्त करने की ओर ध्यान आकर्षित किया गया। महिलाओं की समानता और अधिकारों की हिमायत करने और उनका समर्थन करने के लिए सूर्यास्त के बाद लोगों ने एकजुट होकर बड़े उत्साह के साथ कैंडल मार्च में भाग लिया।

इस कैंडल मार्च की शुरुआत में लोगों का उत्साह बढ़ाने और सकारात्मक माहौल बनाने के लिए एसआरएलएम सदस्यों द्वारा समुदाय और समाज के विभिन्न वर्गों के कई प्रेरणादायक और प्रभावशाली वक्ताओं को एक मंच पर लाया गया। इनमें स्थानीय राजनेता, स्कूल के प्रधानाचार्य और अन्य स्थानीय प्रतिनिधि शामिल थे, जिन्होंने अपने प्रेरणादायी भाषण से कैंडल मार्च के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इसमें सभी आयु की महिलाएं और ऐसे पुरुष भी शामिल थे, जिनमें अपने प्रियजनों के लिए प्यार और सम्मान था, वे अपने हाथों में मोमबत्तियां लेकर सड़कों पर निकले। यह मोमबत्ती उनके दिलों में लैंगिक असमानता के नकारात्मक परिणामों के खिलाफ रोष और ज्वाला की प्रतीक थी।

- मध्य प्रदेश में कैंडल लाइट मार्च के दौरान पुरुष और महिलाएं, मार्च में 50 से अधिक पुरुष और महिलाएं शामिल थीं। साथ मिलकर कार्रवाई... अब और सहन नहीं... केवल दावा। यही तरीका है।





- कैंडल लाइट मार्च प्रतीकात्मक रूप से इन महिलाओं के अंधेरे जीवन में उजाले का प्रतीक है। "अब हम नहीं रुकेंगे क्योंकि हमने अपने पथ रोशन कर दिए हैं।"

- कार्यक्रम में ओडिसी कला रूप (ओडिशा का एक प्राचीन नृत्य) के माध्यम से प्रस्तुति देती एक लड़की। "नृत्य में भागीदारी और आशा की जुगलबंदी"।



- तीन महिलाएँ एक-दूसरे के पीछे देवी की तरह उन वस्तुओं को पकड़े हुए हैं जिनसे वे जीवन भर जुड़ी रही हैं। यह दर्शाता है कि समाज ने उनके लिए कैसी भूमिकाएँ निर्धारित की हैं, अकेले बच्चे को जन्म देने से लेकर घर की देखभाल करने तक। "सहन करें, देखभाल करें और नियमों का पालन करें... जी नहीं, हम भी आगे बढ़ने के लिए पैदा हुए हैं।"





रैलियां

समुदाय को जागृत करने, पहचानी गई समस्याओं का समाधान करने, उनकी आवाज बुलंद करने, उनकी इच्छा को सामूहिक तौर पर प्रकट करने, उनके मुद्दों की गूंज को दूर-दूर तक पहुंचाने के लिए उनकी क्षमता को बढ़ाने के लिए सकारात्मक और सुरक्षित रणनीति के रूप में रैलियां एक अच्छा माध्यम हैं।

कार्रवाई रैलियों के रूप में शुरू हुई जिसने महिलाओं को आवाज उठाने और एकजुट होने पर बल दिया। रैलियां हर जगह आयोजित की गईं जिनमें सहयोगियों, परिवार के सदस्यों, वीओ, एसएचजी, पुरुष, लड़कियां, लड़के, सामाजिक प्रभाव डालने वालों और सीएसओ ने भाग लिया, जिन्होंने भेदभाव और हिंसा के खिलाफ आवाज उठाई। इन रैलियों में नुक्कड़ नाटक और जनसभाएं हुईं जो 'जन-आंदोलन' में तब्दील हो गईं, जिनमें दूर-दराज के गांवों से आई महिलाओं ने अपनी मांगों को जोरदार ढंग से रख और एकजुटता दर्शाई। उन्होंने ऊंची आवाज में तख्तिरों पर लिखे नारे लगाए और लैंगिक हिंसा की निंदा की और अभियान के उद्देश्यों को बताते हुए अपनी आक्रोश और क्रोध व्यक्त किया।

बेहतर ढंग से आयोजित इन रैलियों के द्वारा महिलाओं ने अधिकारों के महत्व, समानता का दर्जा और अवसर प्रदान करने की आवश्यकता के बारे में अपने जागरूक होने की सफल अभिव्यक्ति की। ठोस कार्रवाई के माध्यम से, उन्होंने अपनी जागरूकता व्यक्त की कि कैसे संयुक्त कार्रवाई और एकजुटता उन्हें अपनी अधिकतम क्षमता, कल्याण और गरिमापूर्ण जीवन प्राप्त करने में सक्षम बना सकती है। रैलियों ने काफी लंबी दूरी तय की। वे विभिन्न राज्यों, जिलों, ब्लॉकों और गांवों से होकर गुजरीं तथा देश के कोने-कोने में व्यापक प्रभाव डाला।

- नाटक में पोस्टर लिए महिलाएं, जिन पर लिखा है, "पुरुष महिलाओं के बराबर हैं", जो समानता दर्शाता है। "हम सभी इंसान हैं, हम सभी समान हैं।"

पोस्टर और बैनर

खुद बनाए गए पोस्टरों, बैनरों और नारों ने हर जगह रैलियों को गति प्रदान की तथा अभियान का समूचा वातावरण समानता और अधिकारों की मांग से गुंजायमान हो गया। लैंगिक हिंसा और भेदभाव के खिलाफ जोरदार घोष पूरे वातावरण में फैल गया और जागरूकता नारा बन गया। समुदाय, स्थानीय लोगों, सीएसओ, एनजीओ, पीआरआई, और सभी सहयोगियों ने इस बढ़ती जागरूकता को संज्ञान में लिया जो नीति निर्माण में बदलाव कर सकती है। इस प्रकार सूचना और लैंगिक मुद्दे आम विचारधारा बन गए। सभी महिलाओं और लड़कियों की क्षमता तथा खुद के विकास के माध्यम से व्यक्तिगत और सामाजिक विकास हासिल करने का नई चेतना का मिशन पूरा होता प्रतीत होता है।

- मेघालय में महिलाएं काशी शहर से होकर रैली में भाग लेती हुईं। रैली में लगभग 500 महिलाएं शामिल थीं जो नारे लगा रही थीं। "जब आशा और संकल्प आगे बढ़ते हैं, तो बाधाएं टूट जाती हैं।"





मीडिया की भूमिका

संचार और कनेक्टिविटी के सबसे सशक्त माध्यम के रूप में मीडिया की भूमिका जग-जाहिर है। इस प्रकार, मीडिया इस अभियान की जीवन रेखा बन गया है। "नई चेतना", सरकार के नेतृत्व में चलाया जाने वाला एक अभियान है, जो समुदाय में जागरूकता लाने के अपने मुख्य उद्देश्य के तहत पारंपरिक, प्रिंट, वीडियो बाइट्स, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया अपडेट जैसे विभिन्न प्रकार के मीडिया माध्यमों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करता है। इसने महिलाओं और लड़कियों को अपनी खुद की पहचान बताने और अधिकारों की मांग करने के लिए एक मार्गदर्शी सिद्धांत के रूप में कार्य किया। अभियान के बारे में दैनिक समाचार और सोशल मीडिया अपडेट, लैंगिक हिंसा के बारे में संदेश और रिपोर्ट तथा महिलाओं, लड़कियों और विविध जेंडर वाले लोगों को उनके मौजूदा अधिकारों के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता ने पूरे देश में अभियान को और अधिक मजबूती प्रदान की। जिस प्रणाली के माध्यम से वे अपने मुद्दों को हल कर सकते हैं और न्याय प्राप्त कर सकते हैं, उससे जनता की सोच में एक सकारात्मक बदलाव आया और हर जगह जागरूकता पैदा हुई। सरकारी तंत्र द्वारा सकारात्मक माहौल बनाने और संबंधित बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाए जाने के कारण, मीडिया को इस आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए सकारात्मक आधार मिला। समुदाय, सीएसओ, एसएचजी, वीओ, वीओ-एसएसी, सीएलएफ-एसएसी, स्थानीय प्रतिनिधि, पीआरआई, एनजीओ, और संबंधित मंत्रालयों और विभागों को जागरूक बनाया गया ताकि वे लैंगिक मुद्दों तथा आचार-व्यवहार एवं अवसरों में असमानता को दूर करने के लिए जिम्मेदारी साझा कर सकें।

મામલા અધ્યયન





"बाधाओं से पार पाते हुए, उसने अपनी एजेंसी बनाई"

आशा की मुक्ति की कहानी बहुत ही प्रेरणादायक और अनुकरणीय है। उसने घरेलू हिंसा से बचने के लिए सामाजिक, पुरुष-प्रधान समाज, प्रणालीगत और संस्थागत स्तरों पर कई लड़ाइयां लड़ीं। पिछड़े क्षेत्र की एक आदिवासी महिला का यह साहस किसी चमत्कार से कम नहीं था! अपनी दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ, आशा अपने घर और आस-पास के इलाकों में अपमानजनक माहौल को सुधारती रहीं। एक दिन वह अपने घर में होने वाली हिंसा के दुष्चक्र को तोड़ने में सफल रहीं और इसने एक स्पष्ट संदेश दिया।

आशा मध्य प्रदेश के बस्तर क्षेत्र के गोंड आदिवासी समुदाय से हैं। गोंड आदिवासी लोगों का समूह है, जो शिकारी और प्रकृति उपासक होते हैं, वन में रहना उनकी जीवन-शैली है। शायद इन्हीं प्राकृतिक गुणों ने आशा के भीतर लड़ने की भावना पैदा की होगी। उनके परिवार में महिलाओं ने पीढ़ियों से पति के द्वारा की जाने वाली विभिन्न प्रकार की घरेलू हिंसा का सामना किया। इस कटु सत्य ने आशा को बेचैन कर दिया और दृढ़ता प्रदान की, जब तक कि उसने अपने साहस के बल पर अपने घर और आस-पास इस अन्याय और कुरीति को समाप्त नहीं कर दिया।

उसका शिक्षित न होना और अधिकारों के बारे में पर्याप्त जानकारी न होना उसे अपने क्षेत्र में मौजूद समूह स्तरीय फोरम (सीएलएफ) के समाधान तंत्र को लागू करने से नहीं रोक सका। घरेलू दुर्व्यवहार को लंबे समय तक झेलने के कारण उसे जो बल मिला, उसने उसे अपने समुदाय में लैंगिक भेदभाव और घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं की पीड़ा का निवारण करने के लिए प्रेरित किया।

उसकी दृढ़ता ही उनका हथियार थी, जिसके बल पर वह लड़ी। उसने अपने समुदाय के लिए आवाज उठाई, व्यवस्था के स्तर पर अपनी आवाज उठाई और फिर संस्थागत तंत्र - सीएलएफ संकल्प से न्याय की गुहार लगाई !! यह उनकी उल्लेखनीय भूमिका थी जिसे सागर सीएलएफ ने पहचाना और महत्व दिया। उन्हें निवास, मंडला में फोरम का पदाधिकारी बनाया गया। अपना निरंतर समर्थन देने और जिम्मेदारी के साथ, आशा अब लोकप्रिय बन गई है और कई अन्य महिलाओं को प्रेरित करती है।

यदि कोई महिला अपने अधिकारों और न्याय की मांग करने के लिए आत्मविश्वास से लबरेज है, तो उसे समर्थन मिलना तय है और भेदभावपूर्ण आचरण अंततः समाप्त हो जाता है।

आशा, बस्तर, मध्य प्रदेश

"इंकार से जगी अलख, जिसकी रोशनी से कुप्पमल ने खुद को और अपने समुदाय को मुक्त करके जगाई न्याय और अधिकार की अलख"।

कुप्पमल की जीवन गाथा संघर्ष और मुक्ति के दृढ़ संकल्प का ऐसा ही एक प्रमाण है। एक घटना से उत्साहित होकर, उन्होंने अपने समुदाय में सकारात्मक बदलाव लाने और एजेंसी बनाने के लिए आत्मविश्वास जुटाया।

एक आदिवासी समुदाय से आने वाली, कुप्पम्मल आदिवासियों के साथ गुलाम या वंचित समुदाय जैसा व्यवहार करने की सदियों पुरानी प्रथाओं के बीच पली-बढ़ी - यह एक ऐसी प्रथा है जो महिलाओं को विकास के लिए उनकी क्षमता को पहचानने से रोकती है। कुप्पम्मल तमिलनाडु के एक आदिवासी क्षेत्र में रहती है, उसकी शादी थिरुनावकरासु से हुई है और उनकी एक बेटी भी है। जब वह अपनी किशोरावस्था में थीं और कक्षा 8 में पढ़ रही थीं, तब उनके हालात या उनके समुदाय की सामाजिक-आर्थिक धारणाओं ने उन्हें स्कूल छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया। उन्होंने अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के लिए एक चावल मिल में काम करना शुरू कर दिया।

उस क्षेत्र में कई मिलें चल रही थीं और सभी कुप्पम्मल के आदिवासी समुदाय से संबंधित थीं। आम तौर पर, यह उस आदिवासी समुदाय की सामाजिक-आर्थिक शक्ति या किसी विशेष क्षेत्र में पांच या अधिक ऐसी मिलों के मालिक होने की उद्यमशीलता की क्षमता का संकेत है। लेकिन यह विडंबना है जब आदिवासी समुदाय के योगदान को स्वीकार करने या पहचानने के बजाय, किसी व्यक्ति या महिला (इस मामले में कुप्पम्मल) को अपमानित किया जाता है और विकास के अवसर तलाशने से रोका जाता है।

एक दिन कुप्पम्मल अपनी बेटी को मिल के पास वाले स्कूल में दाखिले के लिए ले गईं। प्रधानाचार्य के शब्दों को सुनकर उसका उत्साह ठंडा पड़ गया - "इस इलाके में 5 मिलें हैं, सभी आपके समुदाय से आती हैं, यहां अपने बच्चे के दाखिले के लिए आज तक कोई नहीं आया"। और फिर

उसे मिल मालिक से बात करके दोबारा आने को कहा। मदद के लिए मिल मालिक से मिलने पर उसका बयान कुप्पम्मल के समुदाय की पहचान के लिए और भी अपमानजनक था, जब मिल मालिक ने कहा- "आपने इस चावल मिल में काम किया है, आपके पति ने यहां काम किया है, और कल भले ही आपकी बेटी पढ़-लिख जाए, वह भी यहीं मेरी मिल में काम करने आएगी, न कि किसी कलेक्टर कार्यालय में जाकर बैठेगी"। किसी भी समुदाय और लैंगिक स्थिति या पहचान के प्रति इस तरह की अपमानजनक विचारधारा में सुधार करने तथा समानता और अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

प्रधानाचार्य और मिल मालिक के अपमानजनक शब्दों ने कुप्पम्मल की अंतरात्मा को झकझोर कर रख दिया और कहीं न कहीं एक तरह से आशा की किरण के रूप में काम किया। कुप्पम्मल ने तुरंत अपने समुदाय की सामाजिक-संस्थागत स्थिति में बड़ा परिवर्तन लाने की तीव्र इच्छा महसूस की तथा सभी लड़कियों और महिलाओं को एक सम्मानजनक जीवन देने का प्रयास करना शुरू कर दिया।

हालांकि उन्हें 2005 में बंधुआ मजदूरी से मुक्त कराया गया था, लेकिन उन्होंने जिला स्तर पर छुड़ाए गए बंधुआ मजदूर पुनर्वास संगठन की अध्यक्षता हासिल करने के लिए बहुत मेहनत की। सबसे बड़ी उपलब्धि राज्य स्तर पर इसका सचिव पद प्राप्त करने के लिए थी। इन शक्तिशाली पदों ने कुप्पम्मल को सामान्य रूप से समाज में विभिन्न पहलों के द्वारा तथा नीति एवं प्रक्रियाओं के स्तर पर सक्रिय रूप से काम करने का अधिकार प्रदान किया जिसने उन्हें अपने समुदाय से पक्षपात, घरेलू दुर्व्यवहार तथा समान स्थिति और अवसरों से वंचित अपने जैसे दूसरे लोगों को बाहर निकालने का हौसला दिया। किसी ने ठीक ही कहा है कि कई काम धैर्य और प्रयासों से ही सफल होते हैं!!





મામલા અધ્યયન

"सोच में बदलाव लाकर, हरिनी ने चुनौती का सामना किया"

जैसे-जैसे सामाजिक दृष्टिकोण बदलते हैं, नए मानक पैदा होते हैं और समानता तय होती है। हरिनी की कहानी इसी तथ्य को उजागर करती है। हरिनी एक ट्रांसजेंडर के रूप में अपनी स्थिति को स्वीकार करने में शर्म महसूस नहीं करती हैं और समुदाय में अपनी जगह बनाने का उसका सफर किसी चुनौती से कम नहीं था।

हरिनी तमिलनाडु के तिरुवल्लुर जिले (कक्कलूर पंचायत) में रहती हैं। शारीरिक विकास के शुरुआती वर्षों में, किशोरावस्था के नाजुक चरण में जब वह मुश्किल से कक्षा 7 में थीं, तो उसने शरीर में अचानक आए बदलावों से कुछ अंतर महसूस किया। इस अजीब बदलाव ने उसके अनुभव को एक स्त्री की भावनाओं से अलग कर दिया। मन से वह खुद को स्त्री ही महसूस करती थीं। हालाँकि, उसके लिए इस अजीबोगरीब घटना से अधिक उसके अस्तित्व में इस शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तन के कारण उसके परिवार वालों को समाज के विरोध का भय था। इस बात को समझे बिना कि प्रकृति का यह व्यवहार इंसान के वश में नहीं है, उनकी इस बदली हुई लैंगिक स्थिति से जुड़े पूर्वाग्रहों ने हरिनी को इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा पूरा करने के बाद अपना परिवार और घर छोड़ने के लिए प्रेरित किया।

हरिनी की शिक्षा इस तथ्य की पुष्टि करती है कि जब प्रतिभा, महत्वाकांक्षा और क्षमताओं की बात आती है तो जेंडर की प्राकृतिक और जटिल प्रकृति कभी भेदभाव नहीं

करती है। वह समय सौभाग्यशाली था जब तिरुवल्लुर जिला कलेक्टर ने अप्रैल में "विश्व ट्रांसजेंडर दिवस" का आयोजन किया और काफी प्रभावशाली भाषण दिया। यह हरिनी के जीवन में एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। हरिनी ने बड़े संतोष के साथ मुस्कराते हुए कहा, उसे "एक नया दृष्टिकोण, एक आवाज, और एक पहचान" मिली।

इस पहचान के बाद हरिनी ने तमिलनाडु एसआरएलएम द्वारा आयोजित परीक्षा प्रथम श्रेणी के अंकों के साथ उत्तीर्ण की। उन्हें तिरुवल्लूर ब्लॉक के लिए "ब्लॉक संसाधन व्यक्ति" के रूप में चुना गया। हरिनी उस दिन को याद करती हैं जिस दिन उन्हें कलेक्टर से आदेश-पत्र मिला था, वह उसके जीवन का सबसे खूबसूरत दिन था।

यह एक ट्रांसजेंडर महिला के प्रति सकारात्मक और समतावादी दृष्टिकोण तथा उसके शानदार शैक्षणिक प्रदर्शन को मान्यता थी, जिसने उसे जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इसने उन्हें अन्य ट्रांसजेंडर लोगों की मदद करने और उनका हौसला बढ़ाने के लिए भी प्रेरित किया जो कई स्थानों - घरों, स्कूलों, समुदायों और कार्यस्थलों में भेदभावपूर्ण मानदंडों के खिलाफ अपनी जमीन तलाशने का प्रयास कर रहे हैं।

हरिनी, तिरुवल्लूर, तमिलनाडु



- सामाजिक दृष्टिकोण में जो परिवर्तन दिखाई दे रहा है कई शर्तों पर, ये हाथ समानता प्रदर्शित करते हैं और सच्ची पहचान को स्वीकार करने का अपरिवर्तनीय उत्साह स्वयं का. यह पहचान पहनावे से प्रदर्शित होती है ऐसा आभूषण जो आपको समाज की प्रतिष्ठा, संतुलन दिलाता है।



பெண்களுக்கு
குடும்பத்தில்
முடிவெடுக்க
அதிகாரத்தை
வழங்குவோம்

காப்போ
காப்போம்
குழந்தைகளை
காப்போம்

பாலின
பாகுபாட்டைக்
களைவோம்

பாலின
வன்முறைக்கு
எதிராக
குரலெழுப்புவோம்

பெண்களுக்கு
சமூகத்தில் சம
வாய்ப்புகளை
வழங்குவோம்

பெண்களுக்கு குடும்ப
முடிவெடுக்கும் அதிகாரத்தை
வழங்குவோம்

பெண்களுக்கு
குடும்பத்தில்
முடிவெடுக்கும்
அதிகாரத்தை
வழங்குவோம்

04

इस अभियान ने अगले वर्ष की
रूपरेखा निर्धारित की

इस प्रकार, बहु-हितधारक भागीदारी ने अभियान के आधार को मजबूती प्रदान की। 'नई चेतना' के अगले चरण तक हर राज्य में इस अभियान के बाद की जाने वाली गतिविधियां भी सुनियोजित तरीके से चलाई गईं और कुछ पहले से ही चल रही थीं। लैंगिक हिंसा पर पहले वर्ष का अभियान लोगों, विशेष रूप से महिलाओं और सभी सहयोगियों को हिंसा क्या है, के बारे में जागरूकता पैदा करने में काफी हद तक सफल रहा। जैसे-जैसे महिलाओं ने अपने अनुभवों को साझा किया, हितधारक जीवन काल में होने वाली हिंसा के विभिन्न रूपों से रूबरू हुए।

जागरूकता और संवेदनशीलता की बात करें तो यह कुछ हद तक हासिल कर ली गई है, अब समय सामाजिक कार्रवाई का है! जैसे-जैसे वक्त गुजरेगा, और बाद की कार्रवाई निरंतर की जाती रहेगी, उम्मीद है कि अभियान के प्रभाव को सामुदायिक संस्थानों और सीएसओ के भीतर घरेलू हिंसा को साझा करने की बढ़ती प्रवृत्ति के रूप में देखा जा सकता है, बिना किसी भय के हिंसा की रिपोर्टिंग की बढ़ती रिपोर्टिंग करने से इस सामाजिक कलंक को कम किया जा सकता है तथा हिंसा के खिलाफ महिलाओं, लड़कियों और विविध जेंडर वाले व्यक्तियों द्वारा अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। हिंसा के सभी रूपों से निपटने के लिए सेवा प्रदाताओं की बढ़ती जवाबदेही तथा समानता, हकदारी और अधिकार सुनिश्चित करने की दिशा में ठोस कार्रवाई करना अभियान के सबसे वांछित परिणामों में से एक रहा है।



- समुदाय का एक साथ आना और उद्देश्यपूर्ण ढंग से एकत्रित होने का भी अपना महत्व, अपना अर्थ अपना महत्व है जिस प्रकार हर कदम एक मील का पत्थर बनता है, उसी प्रकार सामूहिक संकल्प के साथ संयुक्त कार्रवाई, मंजिल तक पहुँचाने में मदद करेगी।



- धर्मपुरी जिले में जागरूकता अभियान में एक सामूहिक संवाद के दौरान महिलाओं ने मोमबत्ती जलाते हुए कहा "हमारी यात्रा शुरू हो रही है... आइए दीपक जलाएं और अपना आगे का रास्ता रौशन करें।"



- मध्य प्रदेश में एक फिल्म स्क्रीनिंग के दौरान महिलाएं-यही तरीका है..फिल्म देखना और उसमें डूब जाना...एक दिन जोर से बोलना



- मिडिल स्कूल के बच्चे हस्तलिखित बैनर पकड़े हुए हैं लैंगिक भेदभाव। "बाल योद्धा- आगे का रास्ता बच्चे दिखायेंगे"।

- मेघालय के कासी गाँव की एक रैली में सबसे पहली कतार में महिलाएं महिला हिंसा के विरुद्ध नारे लगते ये कह रहीं हैं कि "जीत हवा में है और ताकत चारों ओर, हिंसा खत्म होने वाली है, और अधिकार स्वागत योग्य रास्ते पर हैं।"





- मध्य प्रदेश. में महिलाएं एक नुक्कड़ नाटक प्रदर्शन करती हुई | महिलाएं लोक अधिकार केंद्र की स्थापना को मूर्त रूप देने का प्रयास कर रही हैं। "गरिमा के साथ कैचवर्ड और स्वतंत्रता के साथ खोज... जैसे ही वे अधिनियमित होते हैं और प्रचार करते हैं, अभियान आंदोलन में बदल जाता है।"



- तमिलनाडु के तिरुवल्लूर जिले में रैली में भाग लेने वाली सभी महिलाओं की एक तस्वीर।
"महिला शक्ति विश्वास और उत्साह के साथ रैली को बढ़ावा देने के लिए तैयार है।"



- कलेक्टर कार्यालय में सभी स्थानीय प्रतिनिधियों के साथ धर्मपुरी जिले की एक तस्वीर।
दृष्टि, मिशन और कार्रवाई के संगम के साथ, लैंगिक समानता वाली दुनिया की आशा उज्ज्वल हो जाती है

समापन टिप्पणी

इस राष्ट्रव्यापी अभियान के परिणामस्वरूप बुनियादी स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक व्याप्त परस्पर सामंजस्य ने अव्यक्त रूप से 'कार्रवाई करने का आह्वान' किया है। ग्रामीण स्तर पर लैंगिक कार्य योजना और समूह स्तर पर समेकित योजनाओं को पूरा करने के लिए, अभियान ने संबंधित विभागों जैसे महिला एवं बाल विभाग, समाज कल्याण विभाग, पुलिस विभाग, शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, वानिकी विभाग, पशुपालन विभाग, जिला उद्योग केन्द्र आदि सभी स्तरों पर समन्वय स्थापित करने के लिए वीओ और सीएलएफ की प्रतिबद्धता और कार्यों का समर्थन किया है।

आने वाले वर्षों में, यह अभियान एक अंतर-विभाजक दृष्टिकोण को शामिल करेगा, लैंगिकता की समझ को और बढ़ाएगा तथा आने वाले समय में बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ सभी विभागों और समूहों में प्रासंगिकता और समन्वय पैदा करेगा।